قُلْ يَـٰٓأَهْلَ ٱلْكِتَـٰبِ تَعَالَوْا۟ إِلَىٰ كَلِمَةٍ سَوَآءٍۭ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ
أَلَّا نَعْبُدَ إِلَّا ٱللَّهَ وَلَا نُشْرِكَ بِهِۦ شَيْـًٔا وَلَا يَتَّخِذَ بَعْضُنَا
بَعْضًا أَرْبَابًا مِّن دُونِ ٱللَّهِ ۚ فَإِن تَوَلَّوْا۟ فَقُولُوا۟ ٱشْهَدُوا۟ بِأَنَّا
مُسْلِمُونَ ﴿٦٤﴾ يَـٰٓأَهْلَ ٱلْكِتَـٰبِ لِمَ تُحَآجُّونَ فِىٓ إِبْرَٰهِيمَ وَمَآ
أُنزِلَتِ ٱلتَّوْرَىٰةُ وَٱلْإِنجِيلُ إِلَّا مِنۢ بَعْدِهِۦٓ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٦٥﴾
هَـٰٓأَنتُمْ هَـٰٓؤُلَآءِ حَـٰجَجْتُمْ فِيمَا لَكُم بِهِۦ عِلْمٌ فَلِمَ
تُحَآجُّونَ فِيمَا لَيْسَ لَكُم بِهِۦ عِلْمٌ ۚ وَٱللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنتُمْ لَا
تَعْلَمُونَ ﴿٦٦﴾ مَا كَانَ إِبْرَٰهِيمُ يَهُودِيًّا وَلَا نَصْرَانِيًّا وَلَـٰكِن
كَانَ حَنِيفًا مُّسْلِمًا وَمَا كَانَ مِنَ ٱلْمُشْرِكِينَ ﴿٦٧﴾ إِنَّ أَوْلَى
ٱلنَّاسِ بِإِبْرَٰهِيمَ لَلَّذِينَ ٱتَّبَعُوهُ وَهَـٰذَا ٱلنَّبِىُّ وَٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ ۗ
وَٱللَّهُ وَلِىُّ ٱلْمُؤْمِنِينَ ﴿٦٨﴾ وَدَّت طَّآئِفَةٌ مِّنْ أَهْلِ ٱلْكِتَـٰبِ لَوْ
يُضِلُّونَكُمْ وَمَا يُضِلُّونَ إِلَّآ أَنفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ﴿٦٩﴾
يَـٰٓأَهْلَ ٱلْكِتَـٰبِ لِمَ تَكْفُرُونَ بِـَٔايَـٰتِ ٱللَّهِ وَأَنتُمْ تَشْهَدُونَ
﴿٧٠﴾ يَـٰٓأَهْلَ ٱلْكِتَـٰبِ لِمَ تَلْبِسُونَ ٱلْحَقَّ بِٱلْبَـٰطِلِ وَتَكْتُمُونَ
ٱلْحَقَّ وَأَنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٧١﴾

Theme	
The commandment of calling the Jews and Christians to get together on what is common between them and Muslims. The religion of Ibrahim was	यहूद व नसारा को उन बातों पर जमा होने की दावत देने का हुक्म जो उनके और मुसलमानों के दरमियान मुश्तरक हैं। इब्राहीमؑ का दीन

Islam and the Muslims are his followers.	इस्लाम था और मुसलमान उनके पैरौकार हैं।
Tarjumani	
Say: "O people of the Book! Let us get together on what is common between us and you that we shall worship none but Allah, that we shall not associate any partners with Him; that we shall not take from among ourselves any lords beside Allah." If they reject your invitation then tell them: "Bear witness that we are Muslims (who have surrendered to Allah) O people of the Book! Why do you argue with us about Ibraheem, as to whether he was a Jew or a Christian? You know that the Tawrat (Torah) and the Injeel (Gospel) were revealed long after him? Have you no sense at all? So far, you have been arguing about things of which you had some knowledge! Must you now argue about that of which you know nothing at all? Allah knows while you do not Ibraheem was neither a Jew	ऐ नबी, कहो, "ऐ अहले-किताब, आओ एक ऐसी बात की तरफ़ जो हमारे और तुम्हारे दरमियान यकसाँ है	यह कि हम अल्लाह के सिवा किसी की बन्दगी न करें, उसके साथ किसी को शरीक न ठहराएँ, और हममें से कोई अल्लाह के सिवा किसी को अपना रब न बनाए |" इस दावत को कबूल करने से अगर वे मुहँ मोड़ें तो साफ़ कह दो कि गवाह रहो, हम तो मुसलिम (सिर्फ़ ख़ुदा की बन्दगी व इताअत करनेवाले) हैं	ऐ अहले-किताब, तुम इबराहीम के (दीन के) बारे में क्यों झगड़ा करते हो? तौरात और इंजील तो इबराहीम के बाद ही नाज़िल हुई हैं	फिर क्या तुम इतनी बात भी नहीं समझते--- तुम लोग जिन चीज़ों का इल्म रखते हो उनमें तो ख़ूब बहसें कर चुके, अब उन मामलात में क्यों बहस करने चले हो जिनका तुम्हारे पास कुछ भी इल्म नहीं	अल्लाह जानता है, तुम नहीं जानते	इबराहीम न यहूदी था न ईसाई, बल्कि वह तो एक मुस्लिमे-यकासू था और वह हरगिज़ मुशरिकों

nor a Christian but he was a Muslim, true in faith. He was not one of the Mushrikeen (who set up partners with Allah). Surely, the people nearest to Ibraheem are those who follow him, this Prophet (Muhammad) and those who believed in his message, Allah is the Protector of the believers. Some of the People of the Book want to mislead you, but they mislead none except themselves, but they do not realize it. O People of the Book! Why do you deny the revelations of Allah when you know that they are true? O People of the Book! Why do you confound the truth with falsehood and knowingly conceal the truth.	में से न था | इबराहीम से निस्बत रखने का सबसे ज़्यादा हक़ अगर किसी को पहुँचता है तो उन लोगों को पहुँचता है जिन्होंने इसकी पैरवी की और अब यह नबी और उसके माननेवाले इस निस्बत के ज़्यादा हकदार हैं | अल्लाह सिर्फ़ उन्हीं का हामी व मददगार है जो ईमान रखते हों | (ऐ ईमान लानेवालो) अहले-किताब में से एक गिरोह चाहता है कि किसी तरह तुम्हें राहे-रास्त से हटा दे, हालाँकि दरहकीकत वे अपने सिवा किसी को गुमराही में नहीं डाल रहे हैं मगर उन्हें इसका शयुर नहीं है | ऐ अहले-किताब, क्यों अल्लाह की आयात का इनकार करते हो हालाँकि तुम ख़ुद उनका मुशाहिदा कर रहे हो | ऐ अहले-किताब, क्यों हक़ को बातिल का रंग चढ़ाकर मुश्तबह बनाते हो? क्यों जानते-बुझते हक़ को छिपाते हो?
Tafsir	